Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

मुख्य परीक्षा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 3

लोक प्रशासन एवं विश्व का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

RAS – मुख्य परीक्षा

भाग - 3

लोक प्रशासन एवं प्रबंधन

S.No.	Chapter Name	Page No.

1.	**प्रशासन एवं प्रबंधन**
	• प्रशासन
	  ○ प्रशासन के दृष्टिकोण
	  ○ लोक–प्रशासन
	• प्रबन्ध
	  ○ लोक प्रशासन की प्रकृति
	  ○ लोक प्रशासन का क्षेत्र
	  ○ लोक प्रशासन के महत्व में वृद्धि के कारण (कार्यक्षेत्र में)
	• विकासशील व विकसित देशों में लोक प्रशासन की भूमिका
	• विकसित और विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका
	  ○ लोक प्रशासन का अध्ययन के विषय के रूप में विकास
	  ○ निकोलस हेनरी के अनुसार लोक प्रशासन के विकास के चरण
	• भारत में लोक प्रशासन विषय का विकास
	• नवीन लोक प्रशासन
	  ○ NPA के उदय के कारण
	  ○ नव लोक प्रशासन के लक्ष्य
	• लोक प्रशासन के सिद्धान्त
	• वैज्ञानिक प्रबन्धन
	  ○ FW टेलर का योगदान
	  ○ वैज्ञानिक प्रबन्धन की आलोचनाएँ
	  ○ वैज्ञानिक प्रबन्धन की वर्तमान प्रासंगिकता
	• मानव सम्बन्ध उपागम
	  ○ मानवीय सम्बन्ध उपागम की आलोचनाएँ
	  ○ मानव सम्बन्ध उपागम की वर्तमान प्रासंगिकता
	• व्यवहारवादी सिद्धांत
	  ○ विशेषताएँ/मान्यताएँ
	  ○ व्यवहारवादी उपागम का महत्व
	  ○ व्यवहारवादी उपागम की आलोचनाएँ
	• मानव–सम्बन्ध उपागम व व्यवहारवादी उपागम में समानताएँ
	  ○ असमानताएँ
	• नौकरशाही उपागम
	• संरचनात्मक – प्रकार्यात्मक उपागम
	  ○ संरचनात्मक – प्रकार्यात्मक उपागम की मान्यताएँ/विशेषताएँ
	  ○ आलोचनाएँ
	• व्यवस्था सिद्धान्त
	  ○ व्यवस्था सिद्धान्त की विभिन्न विशेषताएँ/मान्यता
	  ○ व्यवस्था सिद्धान्त का महत्व
		1

	• आलोचनाएँ	
2.	**संगठन के सिद्धान्त** • पदसोपान o पदसोपान की विशेषताएँ o पदसोपान का महत्त्व o पदसोपन के दोष o पदसोपान से उत्पन्न दोषों को दूर करने के उपाय • आदेश की एकता o विशेषताएँ o महत्त्व o आदेश की एकता की प्रासंगिकता o कमी o आदेश की एकता को प्रभावित करने वाले तत्व • नियंत्रण का क्षेत्र o नियंत्रण के क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कारक o वर्तमान में नियंत्रण के क्षेत्र के विस्तृत होने के कारण • कॉर्पोरेट गवर्नेंस o कॉर्पोरेट गवर्नेंस की विशेषताएँ o कॉर्पोरेट गवर्नेंस के सिद्धान्त o कॉर्पोरेट गवर्नेंस का महत्त्व • **सामाजिक उत्तरदायित्व** o CSR के प्रावधान o CSR में शामिल गतिविधियॉ o CSR के लाभ o CSR के सम्बन्धित समस्याएँ	**43**
3.	**शक्ति, प्राधिकार, वैधता,उतरदायित्व, प्रत्यायोजन** • शक्ति o व्यवहार में परिवर्तन की दृष्टि से शक्ति के प्रकार o शक्ति का स्त्रोत o शक्ति की विशेषताएँ व लक्षण o शक्ति प्रयोग की सीमाएँ o शक्ति के प्रकार o शक्ति की संरचना • सत्ता o सत्ता की विशेषताएँ o सत्ता के स्त्रोत o सत्ता के स्त्रोत से सम्बन्धित सिद्धान्त/दृष्टिकोण/विचारधारा o सत्ता के प्रकार o सत्ता के अन्य तीन प्रकार o सत्ता पर नियंत्रण या सीमाएँ o शक्ति व सत्ता में अन्तर • वैधता o वैधता के स्त्रोत o वैधता के प्रकार o वैधता की विशेषताएँ/लक्षण o वैधता को बनाए रखने के उपाय o शक्ति, सत्ता तथा वैधता में सम्बन्ध • उत्तरदायित्व	**57**

	○ उत्तरदायित्व के प्रकार ○ उत्तरदायित्व की विशेषताएँ ○ प्रशासनिक प्रक्रिया में उत्तरदायित्व के तीन प्रकार है– • प्रत्यायोजन ○ प्रत्यायोजन का महत्व ○ प्रत्यायोजन के प्रकार ○ प्रत्यायोजन में बाधाएँ	
4.	**नव लोक प्रबंधन(NPM)** • NPM की आलोचना • NPA व NPM में अन्तर • नवीन लोक प्रबंधन का उदय एवं विकास का क्रम • नवीन लोक प्रबंधन की विशेषताएँ/तकनीकें • परिवर्तन का प्रबन्ध ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के कारण ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के चरण ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के महत्त्व ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के विरोध के कारण ○ अच्छे परिवर्तन के प्रबन्ध के गुण	**70**
5.	**प्रशासन के आधारभूत मूल्य** • समर्पण ○ एक लोकसेवक का समर्पण ○ लोकसेवा में समर्पण के लाभ • सत्यनिष्ठा ○ सत्यनिष्ठा के लाभ ○ सत्यनिष्ठा पतन के कारण ○ सत्यनिष्ठा वृद्धि के उपाय ○ भारत में सत्यनिष्ठा वृद्धि हेतु ढॉचा • प्रशासन में गैर पक्ष धारिता ○ प्रशासन में गैर पक्षधारिता का लाभ ○ गैर पक्षधारिता वृद्धि के उपाय • निष्पक्षता ○ निष्पक्षता के प्रशासन में लाभ • सामान्यज्ञ – विशेषज्ञ ○ सामान्यज्ञ – विशेषज्ञ ○ सामान्यज्ञों व विशेषज्ञों में विवाद के मुख्य बिन्दु ○ सामान्यज्ञों व विशेषज्ञों के विभिन्न तर्क ○ सामान्यज्ञ – विशेषज्ञ विवाद के विभिन्न समाधान	**77**
6.	**प्रशासन पर नियंत्रण, विकास प्रशासन** • विधायी नियंत्रण ○ संसदीय नियंत्रण की तकनीकें ○ बजट प्रणाली ○ लेखा परीक्षा पद्धति ○ सीमाएँ ○ संसदीय नियंत्रण की सीमाएँ (अप्रभावशीलता) • प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण ○ न्यायिक नियंत्रण की सीमाएँ • प्रशासन पर विधायी तथा न्यायिक नियंत्रण ○ प्रशासन के ऊपर विधायिका का नियंत्रण :– (केन्द्र के संदर्भ में संसदीय नियंत्रण)	**83**

	○ प्रशासन के ऊपर न्यायपालिका का नियंत्रण ○ प्रशासनिक अधिकरण • विकास प्रशासन ○ विकास प्रशासन के उदय के कारण ○ विकास प्रशासन में 4P ○ विकास प्रशासन की विशेषताएँ ○ विकास प्रशासन के उद्देश्य ○ विकास प्रशासन का क्षेत्र ○ विकास प्रशासन का महत्त्व ○ विकास प्रशासन में समस्याएँ • प्रशासनिक विकास ○ प्रशासनिक विकास की विशेषताएँ ○ प्रशासनिक विकास में विभिन्न समस्याएँ • लोक व निजी प्रशासन	
7.	**राजस्थान में प्रशासनिक ढांचा एवं प्रशासनिक संस्कृति** • राज्यपाल ○ नियुक्ति ○ कार्यकाल तथा पदमुक्ति ○ आवश्यक योग्यताएँ ○ शपथ ○ वेतन तथा अन्य सुविधाएँ ○ शक्तियाँ व कार्य ○ मुख्यमंत्री व मंत्री–परिषद से प्रयुक्त शक्तियाँ ○ विधायी शक्ति ○ वित्तीय शक्तियाँ ○ न्यायिक शक्तियाँ ○ विवेकाधिकार शक्तियाँ ○ मुख्यमंत्री की नियुक्ति व विमुक्ति ○ विधान सभा की बैठक का आह्वान करना ○ विधान सभाः सत्रावसान व भंग करना **(अनु.174)** ○ राज्यपाल का सम्बोधन ○ विधेयक को राष्ट्रपति के विचारार्थ रोकना ○ विधेयक पर हस्ताक्षर ○ सूचनाएँ प्राप्त करना ○ राज्यपाल की स्थिति • **मुख्यमंत्री** ○ मुख्यमंत्री की नियुक्ति ○ पदमुक्ति ○ भूमिका व कार्य ○ मुख्यमंत्री की राज्य प्रशासन में वास्तविक स्थिति • **मंत्रिपरिषद** ○ मंत्रिपरिषद् : गठन व कार्य ○ मंत्रिपरिषद्ः गठन ○ मुख्यमंत्री ○ मंत्रिपरिषद् व मंत्रिमण्डल ○ मंत्रियों की योग्यता ○ मंत्रियों की नियुक्ति ○ शपथ ग्रहण ○ आकार ○ विभाग वितरण	**102**

	○ कार्यकाल • राज्य सचिवालय ○ गठन एवं कार्य • शासन सचिवालय ○ भूमिका ○ सचिवालय तथा प्रशासनिक सुधार • मुख्य सचिव	
8.	**जिला प्रशासन का संगठन** • जिला कलेक्टर ○ जिला कलेक्टर की भूमिका ○ जिला कलेक्टर के कार्य ○ जिला कलेक्टर की भूमिका की समीक्षा • जिला पुलिस अधीक्षक ○ मुख्य कार्य • उप खण्ड एवं तहसील प्रशासन तंत्र ○ नियुक्ति ○ उप–खण्ड अधिकारी के कार्य • तहसीलदार ○ तहसीलदार की भूमिका • पटवारी • पंचायती राज व्यवस्था ○ भारत में पंचायती राज संस्थाओं का विकास ○ बलवंत राय मेहता समिति ○ अशोक मेहता समिति (1977–78 ई.) ○ G.V.K. राव समिति (1985 ई.) ○ L.M. सिंघवी समिति (1987 ई.) ○ P.K. थुंगन समिति (1988 ई.) ○ गाडगिल समिति (1988 ई.) ○ गिरधारी लाल व्यास समिति (1973 ई.) ○ पंचायती राज संस्थाओं से सम्बन्धित प्रावधान ○ पेसा Act (Panchayat Extension to Scheduled Area Act- 1996) • राजस्थान पंचायती राज अधिनियम – 1994	**122**
9.	**संवैधानिक एवं सांविधिक आयोग** • लोक सेवा आयोग (संगठन एवं कार्य प्रणाली) ○ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ○ सदस्यों की नियुक्ति और पदावधि ○ सदस्यों को पद से हटाया जाना ○ लोक सेवा आयोग की कार्यपालिका से स्वतंत्र के सांविधानिक प्रावधान ○ लोक सेवा आयोगों के कार्य ○ लोक सेवा आयोगों के प्रतिवेदन • राजस्थान राज्य वित्त आयोग ○ नगर निकायों की वित्तीय समीक्षा • लोकायुक्त ○ नियुक्ति ○ कार्यकाल ○ अधिकार क्षेत्र ○ जांच प्रक्रिया ○ अन्य विशेषतायें	**140**

	○ राजस्थान लोकायुक्त और उप–लोकायुक्त अधिनियम, 1973 ○ लोकायुक्त का क्षेत्राधिकार • राजस्थान राज्य निर्वाचन आयोग ○ गठन ○ आयुक्त के अधिकार एवं कार्य ○ आयुक्त का कार्यकाल • राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग ○ नियुक्ति ○ राज्य आयोग के कार्य एवं उसमें निहित शक्तियां ○ आयोग द्वारा शुरू किए गए अन्य प्रमुख कार्य ○ नागरिक स्वतंत्रताएं • राजस्थान गारण्टेड डिलीवरी ऑफ पब्लिक सर्विस एक्ट – 2011 ○ मुख्य प्रावधान ○ सीमाएँ व चुनौतियॉ ○ अधिनियम का महत्व • नागरिक अधिकार पत्र ○ घटक/सिद्धांत ○ **सिटीजन चार्टर में शा**मिल बिन्दु ○ **आवश्**यकता • राजस्थान जन सुनवाई का अधिकार अधिनियम–2012 ○ क्षेत्राधिकार ○ सुनवाई का स्तर • उपभोक्ता संरक्षण अधिनिमय–1986 • अधिनियम के तहत उपभोक्ताओं के अधिकार	

विश्व का इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**सामंतवाद** • सामंतवाद की प्रमुख विशेषताएँ • सामंतवाद का पतन • पुनर्जागरण	160
2.	**प्रबोधन का युग** • प्रबोधन के उदय के कारण • प्रबोधन के लक्षण • विचारकों और दार्शनिकों द्वारा निभाई गई भूमिका • ज्ञानोदय और पुनर्जागरण • प्रबोधन के युग का अंत	165
3.	**अमरीकी क्रांति** • अमेरिकी क्रांति की पूर्ववर्ति घटनाएँ • अमेरिकी विजय के कारण • अमेरिकी क्रांति का प्रभाव • अमेरिकी गृहयुद्ध (1861-1865)	167
4.	**फ्रांस की क्रांति** • फ्रांसीसी क्रांति के चरण • फ्रांसीसी क्रांति में महिलाओं की भूमिका	172

	• फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव • नेपोलियन का युग	
5.	**औद्योगिक क्रांति** • औद्योगिक क्रांति का उदय • औद्योगिक क्रांति का प्रभाव • जर्मनी में औद्योगिक क्रांति • संयुक्त राज्य अमेरिका में औद्योगिक क्रांति • जापान में औद्योगिक क्रांति: • रूस में औद्योगिक क्रांति	**181**
6.	**रूसी क्रांति** • 1917 की रूसी क्रांति के कारण • रूसी क्रांति के प्रभाव	**188**
7.	**यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय** • राष्ट्रवाद का अर्थ ○ फ्रांसीसी क्रांति और "राष्ट्र" का विचार • यूरोप में राष्ट्रवाद का निर्माण ○ उदारवादी राष्ट्रवाद ○ 1815 के बाद नवीन रूढ़िवादिता ○ क्रांति का युग: 1830 - 1848 ○ रूमानी कल्पना और राष्ट्रीय भावना • उदारवादियों की क्रांति • जर्मनी और इटली का निर्माण	**190**
8.	**प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918)** • प्रथम विश्व युद्ध के कारण • प्रथम विश्व युद्ध का दौर • प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम • राष्ट्र संघ	**196**
9.	**दो विश्व युद्धों के बीच का काल** • युद्ध की अवधि में विश्व अर्थव्यवस्था: समृद्धि और अवसाद • 1929 की महामंदी • सर्वसत्तावादी शासन: फासीवाद और नाज़ीवाद	**202**
10.	**नाज़ीवाद और हिटलर का उदय** • नाज़ीवाद • सत्ता में हिटलर का उदय • नाजी कार्रवाई • नस्लीय यूटोपिया • नाजी जर्मनी में युवा	**206**
11.	**द्वितीय विश्व युद्ध** • द्वितीय विश्व युद्ध के कारण • घटनाओं का क्रम • जर्मनी युद्ध क्यों हारा • युद्ध के परिणाम • द्वितीय विश्व युद्ध के बाद	**209**
12.	**शीत युद्ध (1945-1991)** • शीत युद्ध के कारण • शीत युद्ध के चरण	**214**

	• शीत युद्ध की महत्वपूर्ण घटनाएँ
	  ○ बर्लिन नाकाबंदी 1948
	  ○ मार्शल योजना बनाम कामिन्फार्म
	  ○ नाटो बनाम वारसॉ समझौता
	  ○ क्यूबाई मिसाइल संकट
	  ○ वियतनाम युद्ध (1960 - 1975)
	  ○ प्राग वसंत 1968
	  ○ सोवियत अफगान युद्ध 1979-89
	• शीत युद्ध का अंत
	• सोवियत संघ के पतन के कारण
	• शीत युद्ध के प्रभाव	

13.	**समाजवाद और साम्यवाद** • समाजवाद ○ भारत में समाजवाद • साम्यवाद	**218**
14.	**उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद** • उपनिवेशवाद • साम्राज्यवाद • नव साम्राज्यवाद	**221**
15.	**चीनी क्रांति** • चीनी गृहयुद्ध की पृष्ठभूमि • चीनी गृहयुद्ध का प्रकोप ○ द्वितीय चीन-जापानी युद्ध • शत्रुता का पुनरारंभ और गृहयुद्ध की समाप्ति	**226**
16.	**मध्य पूर्व में संघर्ष** • अरब एकता और बाहरी विश्व द्वारा हस्तक्षेप • मध्य पूर्व में अन्य देशों द्वारा हस्तक्षेप • इज़राइल का निर्माण और अरब - इज़राइल युद्ध • संयुक्त राष्ट्र चार्टर और सिनाई प्रायद्वीप की वापसी • हमास और फतह • इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष और अमेरिका • भविष्य के पहलू	**228**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

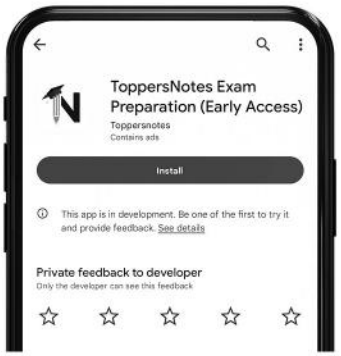

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

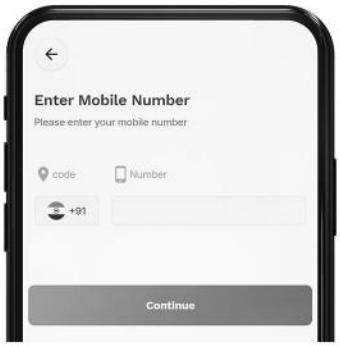

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

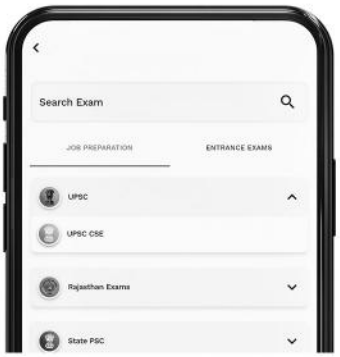

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

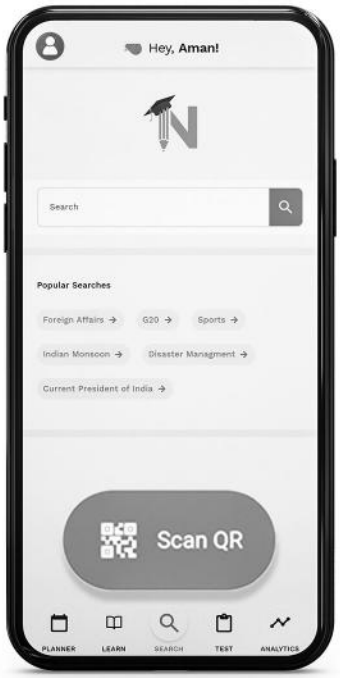

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

1 CHAPTER प्रशासन एवं प्रबंधन

प्रशासन

- प्रशासन शब्द लैटिन भाषा के शब्द Ad-Ministiare से मिलकर बना है ।
- जिसमें Ministiare का अभिप्राय कार्यों को व्यवस्थित करना, देखभाल करना और सेवा प्रदान करने से है ।
- किसी सामान्य उद्देश्य को लेकर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया गया सामूहिक प्रयास प्रशासन कहा जाता है ।

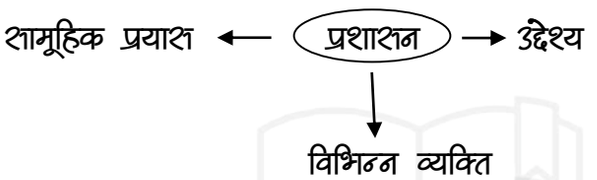

लूथर गुलिक के अनुसार :-

"प्रशासन का सम्बन्ध निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्यों को करवाने से है ।"

पर्सी मैकक्वीन के अनुसार – केन्द्रीय अथवा स्थानीय सरकार के कार्यों से संबंधित प्रशासन ही लोक प्रशासन है ।
वुडरो विल्सन के अनुसार – लोक – प्रशासन विधि की विस्तृत तथा व्यवस्थित प्रयुक्ति है ।
एल.डी. व्हाईट के अनुसार – लोक – प्रशासन उन सभी कार्यों को कहते है, जिनका उद्देश्य उपर्युक्त सत्ता के द्वारा घोषित की गई नीति को लागू करना या पूरा करना होता है ।

प्रशासन की विशेषताएँ :-

1. प्रशासन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है ।
2. प्रशासन के दो प्रकार है –
   I. लोक प्रशासन
   II. निजी प्रशासन
3. प्रशासन में कुछ निश्चित उद्देश्य को लेकर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा सामूहिक प्रयास किया जाता है ।
4. प्रशासन शब्द का प्रयोग प्रायः बडे और विशाल संगठनों के लिए किया जाता है ।
5. प्रशासन के उद्देश्य व इसमें काम करने वाले व्यक्तियों के उद्देश्य में भिन्नता हो सकती है ।

डोनहम के अनुसार :-

"यदि आधुनिक मानव सभ्यता का पतन हुआ तो ऐसा मुख्यतया प्रशासन की विफलता के कारण होगा ।"

प्रशासन के दृष्टिकोण :-

1. <u>प्रबन्धकीय दृष्टिकोण</u> :-
   - इस दृष्टिकोण का मानना है कि प्रशासन में POSDCORB (Planning, Organising, Staffing, Directing, Co-ordination, Reporting, Budgeting) से सम्बन्धित गतिविधियाँ संपन्न करने वाले उच्च अधिकारी प्रशासन का भाग होते है ।

     अर्थात्

   - संगठन में केवल उच्च स्तरीय निर्णय लेने वाले व उनका क्रियान्वयन करने वाले व्यक्ति ही प्रशासन का भाग है ।

     नोट – वर्ष 1971 में इसमें E-Evaluation जोडा गया ।

2. <u>एकीकृत दृष्टिकोण</u> :-
   - इस दृष्टिकोण का मानना है कि संगठन में सभी कार्य व प्रक्रिया चाहे वे किसी भी स्तर के कर्मचारी द्वारा संपन्न की जाए, प्रशासन का भाग है ।

     अर्थात्

   - उच्च पदाधिकारी, तकनीकी कर्मचारी, लिपिकीय वर्ग व सहायक कर्मचारी भी प्रशासन का महत्वपूर्ण अंग है ।
   - एकीकृत दृष्टिकोण को व्यापक दृष्टिकोण माना जाता है ।

लोक-प्रशासन

- लोक प्रशासन, प्रशासन का वह भाग है जो एक विशिष्ट राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत रहकर राजनीतिक निर्णयों को कार्यरूप में लागू करता है ।
- <u>एपलबी के अनुसार</u> – "नीति निर्माण ही लोक प्रशासन का सार है ।"
- <u>अल्बर्ट साइमन के अनुसार</u> – "साधारण प्रयोग में लोक प्रशासन का अर्थ राष्ट्रीय, प्रान्तीय, स्थानीय सरकारों की कार्यपालिका शाखाओं की क्रिया से है ।"
- <u>फिफनर के अनुसार</u> – "सरकार का कार्य करना ही लोक प्रशासन है चाहे वह स्वास्थ्य प्रयोगशाला में एक्स-रे मशीन का संचालन हो या टकसाल में सिक्के डालना हो ।"

<u>प्रशासन</u>	<u>लोक-प्रशासन</u>
1. प्रशासन व्यापक दृष्टिकोण है ।	1. यह संकुचित दृष्टिकोण है क्योंकि यह प्रशासन का भाग है । तथा सार्वजनिक नीतियों से संबंधित है ।
2. प्रशासन एक क्रिया-प्रक्रिया दोनों है ।	2. लोक प्रशासन एक तंत्र है जिसके द्वारा विभिन्न जनकल्याणकारी कार्य संपन्न किए जाते है ।
3. इसका सम्बन्ध विभिन्न लोगों से कार्य करवाने से है ।	3. यह दोहरे स्वरूप वाला है – विषय तंत्र
4. किसी सामान्य उद्देश्य को लेकर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया गया सामूहिक प्रयास प्रशासन है ।	4. लोक प्रशासन सरकार के कार्य का वह भाग है जिसके द्वारा सरकार के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति होती है ।

शासन	लोक – प्रशासन
1. शासन का सम्बन्ध सरकार से होता है ।	1. लोक प्रशासन का सम्बन्ध नौकरशाही से होता है ।
2. इसका संचालन जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है ।	2. इसका संचालन सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा किया जाता है ।
3. यह निर्देश संविधान से प्राप्त करता है ।	3. लोक प्रशासन सरकार के निर्देशन पर कार्य करता है ।
4. यह जनता के प्रति उत्तरदायी है अतः इन्हें जनसेवक कहा जाता है ।	4. ये सरकार के प्रति उत्तरदायी है अतः इन्हें सरकारी सेवक कहा जाता है ।
5. शासन का मुख्य कार्य नीति निर्माण है ।	5. लोक प्रशासन नीतियों का क्रियान्वयन करता है ।

प्रबन्ध

- प्रशासन या संगठन का वह भाग जो संसाधनों के समुचित उपयोग, उनमें समन्वय तथा संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति के क्रम में उनका संचालन करना सुनिश्चित करवाता है ।
- प्रबन्ध द्वारा प्रायः लूथर गुलिक द्वारा प्रतिपादित POSDCORB से सम्बन्धित कार्य सम्पन्न किए जाते है ।

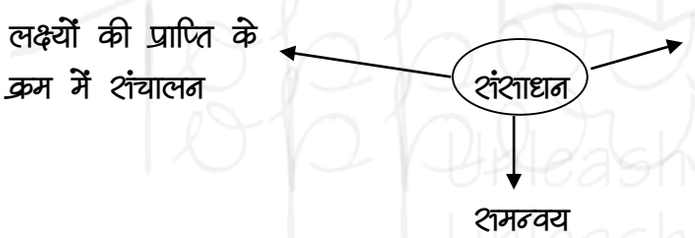

प्रशासन व प्रबन्ध में अन्तर :- इनके मध्य सर्वप्रथम अन्तर ऑलिवर शेल्डर द्वारा सन् 1923 में 'फिलोसॉफी ऑफ मैनेजमेन्ट' पुस्तक में किया गया ।

प्रशासन	प्रबन्ध
1. प्रशासन एक व्यापक अवधारणा है ।	1. प्रबन्ध प्रशासन का ही अंग है अतः यह संकुचित अवधारणा है ।
2. प्रशासन का मुख्य कार्य संगठन के लक्ष्यों को निर्धारित करना है ।	2. प्रबन्ध इन निर्धारित लक्ष्यों (उक्त) को प्राप्त करने का प्रयास करता है ।
3. प्रशासन संगठन में प्रभावी निर्देशन सुनिश्चित करता है ।	3. प्रबन्ध संगठन में प्रभावी कार्य निष्पादन सुनिश्चित करता है ।

प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विभिन्न विचारधाराएँ

- यह सर्वमान्य विचारधारा है जिसका मानना है कि प्रशासन व्यापक है तथा प्रबन्ध इसमें सम्मिलित है ।
- थुल्ज, रॉबिन्सन ने इसका समर्थन किया

- इस विचारधारा का मानना है कि प्रबन्ध एक व्यापक शब्द है जिसमें प्रशासन सम्मिलित है ।
- डे.पी. डेनियल, जेम्स लुण्डी

- इस विचारधारा का मानना है कि प्रबंध व प्रशासन एक-दूसरे के पर्यायवाची है तथा इन दोनों के मध्य किसी प्रकार का अंतर नही है ।
- फॉलेट, उर्विक, M.P. शर्मा

लोक प्रशासन की प्रकृति

1. <u>प्रबन्धकीय व एकीकृत</u> :-

   <u>प्रबन्धकीय</u> :-

   - इस दृष्टिकोण का मानना है कि लोक प्रशासन की प्रकृति केवल उच्च स्तरीय प्रशासकीय निर्णय लेने, नीतियों व कानूनों के व्यावहारिक क्रियान्वयन को सुनिश्चित कराने से है ।

     अर्थात्

     संगठन में उत्तरदायी व उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति तथा उनके कार्य लोक प्रशासन की प्रकृति को स्पष्ट करते है ।
   - इसके समर्थक :- साइमन, स्मिथबर्न है ।

   <u>एकीकृत :-</u>

   - संगठन में उच्च स्तर से लेकर निम्नतम स्तर तक कार्यरत समस्त कार्मिकों की क्रियाओं को यह दृष्टिकोण लोक प्रशासन की प्रकृति में सम्मिलित करता है ।
   - समर्थक : विलोबी, व्हाईट है ।

2. <u>लोक प्रशासन विज्ञान या कला के रूप में</u> :- समर्थक - विलोबी, विल्सन, मर्सन

   <u>लोक प्रशासन विज्ञान के रूप में</u> :-

   (a). लोक प्रशासन में विज्ञान की भाँति सर्वमान्य सिद्धान्त व नियम है । ये सिद्धान्त सार्वभौमिक है । उदाहरण- पदसोपान, आदेश की एकता, नियंत्रण का क्षेत्र, संचार, पर्यवेक्षण, अभिप्रेरणा (motivation), केन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण आदि ।

(b). लोक प्रशासन में विज्ञान की भाँति विभिन्न वैज्ञानिक विधियाँ प्रयुक्त की जाती है ।
उदाहरण – CPM (Critical Path Method) , PERT इत्यादि ।

(c). लोक प्रशासन विज्ञान की भाँति मूल्य मुक्त है ।

(d). लोक प्रशासन में इसके सिद्धान्तों के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है ।

(e). लोक प्रशासन के विशेषज्ञ आज चिकित्सक, इंजीनियर व मनोवैज्ञानिक की भाँति परामर्शदाता की भूमिका निभाने लगे है ।

(f). लोक प्रशासन के प्रमुख ग्रन्थ अर्थशास्त्र, रिपब्लिक, आईन-ए-अकबरी इस विषय को प्रामाणिक व वैज्ञानिक आधार प्रदान करने में सहायक है ।

लोक प्रशासन कला के रूप में :-

समर्थक – महादेव प्रसाद शर्मा (भारत में लोक प्रशासन के पिता), टीड

(a). प्रशासक बनने के लिए विशिष्ट प्रतिभा की आवश्यकता होती है उसी प्रकार विशिष्ट प्रतिभा का धनी व्यक्ति ही अच्छा कलाकार हो सकता है ।

(b). प्रशासन कला की भाँति व्यक्तित्व पर निर्भर करता है ।

(c). प्रत्येक कलाकार में सृजनात्मक क्षमता होती है ठीक उसी प्रकार एक प्रशासक भी सृजनात्मक क्षमता के माध्यम से नवाचार करता है ।

(d). प्रशासन कला की भाँति देशकाल के अनुसार परिवर्तित होता है ।

(e). प्रत्येक कला की अभिव्यक्ति हेतु माध्यम की आवश्यकता होती है उसी प्रकार एक प्रशासक का माध्यम संगठन, संगठन की नीतियाँ एवं संगठन का परिवेश है ।

(f). कलाकार बनने हेतु प्रशिक्षण व अभ्यास की आवश्यकता होती है इसी प्रकार प्रशासन में प्रशासनिक क्षमता / कौशल/दक्षता के विकास हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ।

(g). जिस प्रकार कला का विकास धीरे-धीरे हुआ है उसी प्रकार प्रशासन का विकास भी निरन्तर हो रहा है ।

निष्कर्ष :- कहा जा सकता है कि – लोक प्रशासन न तो कला है न विज्ञान है बल्कि यह सामाजिक विज्ञान का विकसित होता विषय है ।

लोक प्रशासन का क्षेत्र :-

1. संकुचित दृष्टिकोण :-

- इस दृष्टिकोण का मानना है कि प्रशासन का सम्बन्ध केवल कार्यपालिका से है जो विधायिका द्वारा निर्मित नीतियों के क्रियान्वयन करने वाला तन्त्र है ।
- इस दृष्टिकोण के अनुसार विधायिका व न्यायपालिका लोक प्रशासन के क्षेत्र में सम्मिलित नही होते है ।
- समर्थक = वाइमन, स्मिथबर्न

2. व्यापक दृष्टिकोण :-

- इस दृष्टिकोण की मान्यता है कि लोक प्रशासन का सम्बन्ध शासन के तीनों अंगो व्यवस्थापिका कार्यपालिका व न्यायपालिका से है ।
- लोक प्रशासन व्यवस्थापिका को विभिन्न आँकडे उपलब्ध करवाने के साथ सदन संचालन में सहायता करता है ।
- कार्यपालिका को लोक प्रशासन नीति – निर्माण और नीति–क्रियान्वयन में सहायता प्रदान करता है।
- प्रशासन न्यायपालिका के विभिन्न आदेशों की क्रियान्विति, विभिन्न गवाह और साक्ष्य लाना आदि लोक प्रशासन के कार्यक्षेत्र में आते है ।

3. POSDCORB दृष्टिकोण :-

- इस दृष्टिकोण का प्रतिपादन लूथर गुलिक ने किया जिसके अनुसार –

P – Planning	= संसाधनों का सदुपयोग विभिन्न योजनाओं की रूपरेखा का निर्धारण करना ।
O – Organising	= Man Method Material Machine को संगठित करना ।
S – Staffing	= कार्मिकों की भर्ती, वेतन प्रशिक्षण, पदोन्नति सम्बन्धी कार्य करना ।
D – Directing	= उच्च अधिकारी द्वारा अधीनस्थों को निर्देश व मार्गदर्शन प्रदान करना ।
Co – Co-ordination	= संगठन में विभिन्न व्यक्तियों व संगठन की विभिन्न इकाईयों के मध्य समन्वय स्थापित करना ।
R – Reporting	= प्रत्येक अधीनस्थ अपने कार्यो की प्रगति, बाधाओं से उच्च अधिकारी को अवगत कराए ।
B – Budgeting	= संगठन की आय–व्यय का ब्यौरा, वित्त प्रशासन में O_2 का कार्य
E – Evaluation	= यह शब्द वर्ष 1971 में जोडा गया था ।

आलोचना :-

1. प्रशासन का मुख्य कार्य नीति निर्माण, मूल्यांकन, जनसम्पर्क करना है जो कि पूरे POSDCORB सिद्धान्त से गायब है ।
2. जनकल्याण जो लोक प्रशासन का दर्शन है, POSDCORB सिद्धान्त में कही भी दिखाई नहीं देता है ।
3. POSDCORB मानव सम्बन्ध उपागम का विरोधी है जिसमें मानवीय सम्बन्धों को स्थान नहीं दिया है ।
4. यह सिद्धान्त लोक प्रशासन की केवल प्रबन्धकीय नीति की व्याख्या करता है ।

4. पाठ्य विषयवस्तु दृष्टिकोण :-

- लेविस मेरियम समर्थित इस दृष्टिकोण का मानना है कि POSDCORB से लोक प्रशासन नहीं चलता है बल्कि यह सरकार द्वारा दी जा रही सेवाओं जैसे- चिकित्सा, स्वास्थ्य, कृषि, परिवहन, समाज कल्याण जैसी विषय सामग्री पर निर्भर है ।
- मेरियम का मानना है कि :- "यह कैंची के दो फलकों के रूप में है जिसमें एक फलक POSDCORB से युक्त ज्ञान है तो दूसरा फलक विषय का ज्ञान है, अतः दोनों फलक धारदार होने चाहिए ।"

5. लोक नीति संबंधी दृष्टिकोण :-

- इस दृष्टिकोण का मानना है कि लोक प्रशासन लोक नीति क्रियान्वयन के साथ-साथ लोक नीति निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।
- समर्थक - ड्रोर, लासवेल

6. लोक निजी प्रशासन दृष्टिकोण :-

इसमें 2 विचारधाराएँ है

लोक - निजी में अन्तर नहीं है ।	लोक -निजी में अन्तर है ।
समर्थक - फॉलेट	समर्थक - साइमन
- गुलिक	- एपलबी
- उर्विक	

7. आधुनिक दृष्टिकोण :-

- इसके अनुसार लोक प्रशासन का क्षेत्र परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील है ।
  अर्थात्
- जिस प्रकार राज्य के कार्यक्षेत्र में वृद्धि होती है उसी प्रकार लोक प्रशासन का कार्यक्षेत्र भी बढता जाता है ।

विभिन्न मान्यताएँ :-

1. राजनीति-प्रशासन द्विभाजन सिद्धान्त को अस्वीकृत करता है ।
2. लोक व निजी प्रशासन समान है ।
3. आधुनिक दृष्टिकोण प्रशासन में 3 E [Economy (मितव्ययिता), Effectiveness (प्रभावशीलता), Efficiency (कार्यकुशलता)] अवधारणा पर बल देता है ।

लोक प्रशासन का महत्व :-

1. सरकार के उद्देश्य प्राप्त करने का साधन :- राज्य की इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रशासन ही एकमात्र माध्यम रहा है क्योंकि यह सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों हेतु बनाई गई नीतियों का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करता है ।

2. <u>जनकल्याण का माध्यम</u> :-

- भारत में लोक प्रशासन संविधान के नीति निदेशक तत्वों के माध्यम से समाज के दीन-हीन व निर्योग्यता युक्त व्यक्तियों हेतु राज्य द्वारा विशेष प्रयासों के माध्यम से समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जाता है ।
- चिकित्सा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, शिक्षा, कृषि, ऊर्जा, आवास आदि समस्त मूलभूत मानवीय सेवाओं का संचालन प्रशासन के माध्यम से होता है, अतः कहा जाता है - ''प्रशासन जन्म से लेकर कब्र तक विद्यमान है'' - वाल्डो (बुक :- एडमिनिस्ट्रेटिव स्टेट-1948)

3. <u>एकता, अखण्डता व शान्ति व्यवस्था बनाए रखना</u> :-

यद्यपि सीमा पर रक्षा का कार्य सैनिक प्रशासन का है किन्तु शान्ति काल में सीमाओं की रक्षा, राष्ट्र की आन्तरिक अखण्डता, शान्ति व्यवस्था, साम्प्रदायिक सौहार्द व समरसता बनाए रखने का दायित्व लोक प्रशासन का ही है ।

4. <u>लोकतंत्र का वाहक व रक्षक</u> :- आम व्यक्तियों तक शासकीय कार्यों की पहुँच सुनिश्चित करना, निष्पक्ष चुनाव करना, जन-शिकायतों का निवारण, राजनैतिक चेतना में वृद्धि करना, विभिन्न विकास कार्यों में जनसहभागिता सुनिश्चित करना लोक प्रशासन का मुख्य कार्य है ।

5. <u>सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनकर्ता के रूप में</u> -

I. <u>सामाजिक परिवर्तनकर्ता के रूप में</u> :- विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, दहेज आदि कुरीतियों का समाधान प्रशासन द्वारा निर्मित सामाजिक नीतियों, सामाजिक नियमों के माध्यम से समाधान करने का प्रयास किया जाता है ।

II. <u>आर्थिक परिवर्तनकर्ता के रूप में</u> :- देश में व्याप्त बेरोजगारी, गरीबी, समाजवाद-पूँजीवाद में सामंजस्य, आर्थिक संसाधनों का सही दिशा में प्रयोग करना इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य किए जाते है ।

6. <u>सभ्यता, संस्कृति व कला के संरक्षणकर्ता के रूप में</u> :- लोक प्रशासन द्वारा प्रत्येक राष्ट्र की सांस्कृतिक विविधता व विरासत का संरक्षण, चित्रकला, वास्तुकला व संगीतकला का संरक्षण व विकास व देश के गौरवशाली मूल्यों का संरक्षण किया जाता है ।

7. <u>विधि व न्याय प्रदान करना</u> :- लोक प्रशासन का कर्त्तव्य है कि -

I. संविधान द्वारा निर्मित कानून, नियम, नीतियों व निर्धारित मापदण्डों के अनुसार राजकीय कार्यों का संचालन करना ।

II. विधि का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को दण्डित करवाना ।

III. न्यायपालिका के निर्णयों की पालना सुनिश्चित करना ।

8. आजीविका का माध्यम :-

- अधिकतर देशों में कार्यशील जनसंख्या का एक बडा हिस्सा राजकीय सेवाओं में कार्य करता है ।
- एक अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 2 करोड, USA में 18%, फ्रांस में 33% व स्वीडन में 38% लोग राजकीय सेवाओं में कार्यरत है ।

9. लोक प्रशासन अध्ययन के विषय के रूप में :-

- लोक प्रशासन के अध्ययन से शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ प्रशासन की एक समझ विकसित होती है ।
- दूसरी ओर इसका अध्ययन करने वालों में अच्छे नागरिक बनने के गुणों का विकास होता है ।
  विल्सन के अनुसार - ''लोक प्रशासन सरकार की चौथी शाखा है ।''
  डोनहम के अनुसार - ''वर्तमान सभ्यता की असफलता, प्रशासन की असफलता है ।''
  एपलबी के अनुसार - ''प्रशासन के बिना सरकार मात्र परिचर्चा क्लब है ।''

लोक प्रशासन के महत्व में वृद्धि के कारण (कार्यक्षेत्र में) :-

1. ''पुलिस राज्य'' के स्थान पर 'लोक कल्याणकारी' राज्य की अवधारणा का उद्भव
2. जनसंख्या वृद्धि
3. पर्यावरणीय निम्नीकरण (अकाल, सूखा, बाढ, ग्लोबल वार्मिंग आदि)
4. वर्ग संघर्ष
5. साम्प्रदायिक दंगे, जातीय हिंसा आदि
6. नस्ल भेद
7. साइबर क्राइम
8. औद्योगिक क्रान्ति
9. आतंकवाद
10. नक्सलवाद

LPG (1990) के बाद लोक प्रशासन का बदलता स्वरूप

1. राज्य का ''पश्च बेलन सिद्धान्त'' तथा ''गैर-नौकरशाहीकरण'' (Golden Handshake Scheme) पर बल दिया ।
2. लोक प्रशासन नियंत्रणकर्ता के स्थान पर प्रोत्साहनकर्ता बन गया है ।
3. प्रशासन में 3E का समावेश हुआ ।
4. लोक प्रशासन में जनसम्पर्क और जनसहभागिता पर बल दिया गया ।
5. नागरिक अधिकार पत्र, RTI, सामाजिक अंकेक्षण (Social Auditing), उपभोक्ता संरक्षण जैसे नवाचार ।
6. प्रशासन में सूचना प्रौद्योगिकी का बढता प्रयोग (E-governance) ।
7. प्रशासनिक नीतियों के निर्धारण में World Bank, IMF, UNO आदि की भूमिका में वृद्धि ।

विकासशील व विकसित देशों में लोक प्रशासन की भूमिका

विकसित देशों के प्रशासन की विशेषताएँ :-

1. विकेन्द्रीकृत प्रशासन
2. राष्ट्रीय कानूनों के प्रति प्रतिबद्धता
3. पारदर्शिता युक्त, जवाबदेही व उत्तरदायी प्रशासन (TAR)
4. पेशेवर नौकरशाही
5. जनसहभागिता युक्त प्रशासन
6. प्रशासनिक संरचना तार्किक व स्वतंत्र

विकासशील देशों के प्रशासन की विशेषताएँ :-

1. प्रशासन में भ्रष्टाचार व लालफीताशाही
2. प्रशासन औपनिवेशिक विरासत
3. जनसहभागिता की कमी
4. प्रशासन में प्रतिबद्धता का अभाव
5. संक्रमणकालीन प्रशासनिक व्यवस्था
6. अकर्मण्यता व रूढ़िवादिता

प्रशासन की भूमिका :-

1. सरकार के उद्देश्य प्राप्त करने का साधन
2. जनकल्याण का माध्यम
3. एकता, अखण्डता व शान्ति व्यवस्था बनाए रखना
4. लोकतंत्र का वाहक व रक्षक
5. सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनकर्ता के रूप में
6. सभ्यता, संस्कृति व कला के संरक्षणकर्ता के रूप में
7. विधि व न्याय प्रदान करना
8. आजीविका का माध्यम
9. लोक प्रशासन अध्ययन के विषय के रूप में ।
10. प्राकृतिक व मानवीय आपदा के निवारक के रूप में ।
11. मानवाधिकारों का संरक्षणकर्ता ।
12. प्रशासनिक नीतियों का प्रसारणकर्ता व प्रशासनिक नवाचारों का प्रारम्भकर्ता के रूप में ।
13. राजनैतिक, सांस्कृतिक परिवर्तनकर्ता के रूप में ।

विकसित और विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका :-

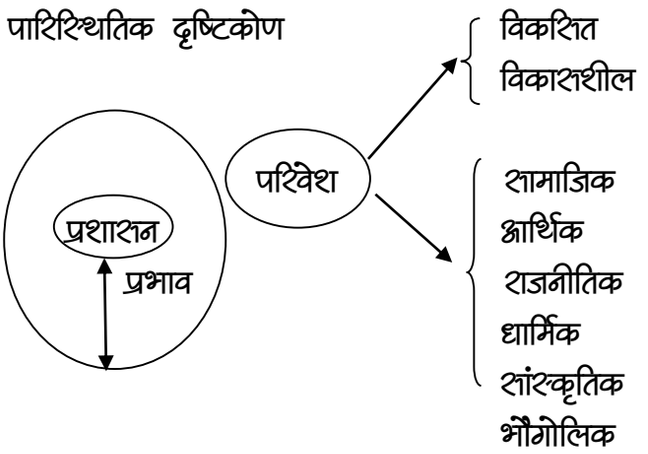

1. विकासशील देश – गरीबी, भूखमरी, जैसी समस्याएँ थी । विकासशील देशों की समस्याओं के समाधान हेतु विकास प्रशासन
   विकसित देश – वहाँ की परिस्थितियों के अनुरूप नवीन लोकप्रशासन ।
2. लोक प्रशासन सामाजिक आर्थिक परिवर्तन और विकास का साधन है । किन्तु लोक प्रशासन की भूमिका में विकसित देशों में गुणात्मक ज्यादा है तथा विकासशील देशों में मात्रात्मक ज्यादा है ।
3. लोक प्रशासन राजनीति परिवर्तन और विकास का साधन है लोक प्रशासन की यह भूमिका विकसित और विकासशील देशों में अलग-अलग होती है । लोक प्रशासन की यह भूमिका विकासशील देशों में अधिक महत्वपूर्ण होती है बजाए विकसित देशों के ।
   <u>असंतुलित राजनीति</u> – यह विकासशील देशों की विशेषता होती है । इसका अर्थ है विकासशील देशों का जितना प्रशासन परिपक्व है राजनीति उतनी परिपक्व नहीं है क्योंकि प्रशासन का विकास औपनिवेशिक काल में हुआ जबकि राजनीति का विकास स्वतंत्रता के बाद हुआ ।
4. नीति निर्माण में प्रशासन की भूमिका – विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में प्रशासन की भूमिका नीति निर्माण में ज्यादा महत्वपूर्ण होती है ।
5. "एफ डब्ल्यू रिग्स" :- विकसित विकासशील देशों की तुलना की तो विकासशील देशों की कुछ विशेषताएँ पायी जाती है –
   A- विकासशील देशों की एक महत्वपूर्ण विशेषता विषम जातीयता होती है । एक ही समय में अलग-अलग प्रभावों, परम्पराओं, रीति रिवाजों का अस्तित्व होना ।
   रिग्स ने सन् 1959 में अपनी थ्योरी दी "त्रिजमीय समाज और साला प्रतिमान" के नाम से सिद्धान्त दिया । (साला स्पेनिश शब्द है जिसका अर्थ सरकारी कर्मचारी होता है ।)
   B- <u>औपचारिकता</u> :- सिद्धांत और व्यवहार के बीच की दूरी

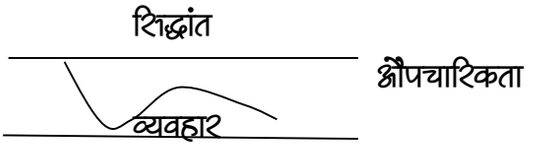

लोक प्रशासन का अध्ययन के विषय के रूप में विकास

लोक प्रशासन का उद्भव अमेरिका में क्यों ?

1. USA में ''लूट प्रणाली (Spoil system)'' की समाप्ति होना ।
2. अमेरिका में लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का उद्भव होना ।
3. तीव्र औद्योगीकरण व बडे पैमाने पर सामाजिक विस्थापन होना ।
4. अमेरिकी संगठनों में प्रबन्धकीय जटिलताएँ होना ।

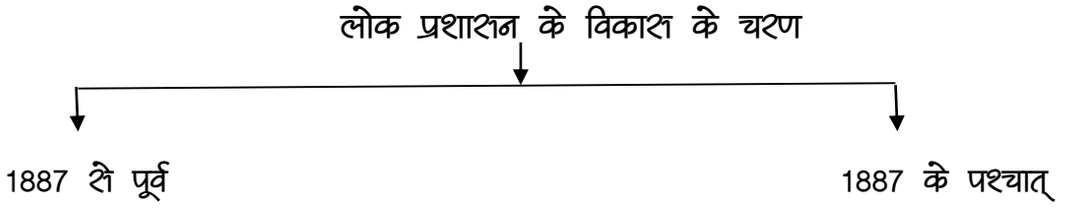

प्राचीन राजनैतिक चिन्तकों द्वारा प्रशासन का अध्ययन

कौटिल्य – अर्थशास्त्र प्लेटो – रिपब्लिक अरस्तु – पॉलिटिक्स मैकियावली – द प्रिन्स ↓ कैमरलवाद (जर्मनी व ऑस्ट्रिया) द्वारा प्रशासन के सामान्य सिद्धान्तों का प्रचार, प्रसार किया । (जॉर्ज जिन्के) ↓ लोक प्रशासन का सर्वप्रथम अध्ययन 'प्रशा' में प्रारंभ हुआ । ↓ 18वीं शताब्दी में अमेरिका के वित्त मंत्री हेमिल्टन द्वारा 'द फेडरलिस्ट' नामक लेख में लोक प्रशासन शब्द की सर्वप्रथम व्याख्या की गई । ↓ वर्ष 1812 में चार्ल्स ज्या बुनिन द्वारा 'प्रिंसिंपल द एडमिनिस्ट्रेशन पब्लिक' (फ्रेंच भाषा) नामक रचना को लोक प्रशासन की प्रथम रचना माना जाता है ।	1. राजनीतिक – प्रशासन द्विविभाजन (1887–1926) 2. सिद्धान्तों का स्वर्णकाल (1927–1937) 3. चुनौतियों का काल (1938–1947) 4. पहचान का संकट (1948–1970) 5. अन्तः अनुशासनात्मक अध्ययन पर बल या नवलोक प्रशासन का काल (1971–1990) 6. LPG व लोक प्रशासन या नवलोक प्रबंधन का काल (1991.....)

प्रथम चरण (राजनीति-प्रशासन द्विविभाजन) (1887-1926 ई.) :-

- 1887 ई. में "द स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन" नामक लेख में वुडरो विल्सन द्वारा राजनीति प्रशासन द्विविभाजन विचारधारा का प्रतिपादन किया गया । अतः वुडरो विल्सन को लोक प्रशासन का जन्मदाता माना जाता है ।
- वुडरो विल्सन का मानना था कि संविधान की रचना करना बहुत सरल है किन्तु इसे चलाना बहुत कठिन है ।
- इसी क्रम में वर्ष 1900 में अमेरिका के गुडनाऊ ने "Politics and Administration" पुस्तक में इस द्विविभाजन का समर्थन किया ।
- गुडनाऊ को अमेरिका में लोक प्रशासन का पिता कहा जाता है ।
- गुडनाऊ का मानना था कि राजनीति राज्य इच्छा को प्रतिपादित करती है जबकि प्रशासन इसका क्रियान्वयन करता है ।
- वर्ष 1920 में मैक्स वैबर ने नौकरशाही सिद्धान्त का प्रतिपादन किया ।
- वर्ष 1926 में लोक प्रशासन पर प्रथम पाठ्यपुस्तक "Introduction to the study of Public Administration" की रचना L.D. व्हाईट के द्वारा की गई । इस पुस्तक को लोक प्रशासन की प्रथम पाठ्यपुस्तक कहा जाता है ।

द्वितीय चरण (सिद्धान्तों का स्वर्णकाल) (1927-37 ई.) :-

- इस चरण में लोक प्रशासन के सिद्धान्तों का विकास हुआ जो निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों में लिखे गए-
  1. विलोबी की पुस्तक - "The Principle of Public Administration" (1927)
  2. मूने व रैले की पुस्तक - "Onward industry" (1930)
  3. गुलिक व उर्विक की पुस्तक - "Papers on Science of Administration" (1937)
  4. फेयॉल की पुस्तक - "Industrial and General Management"
- लोक प्रशासन व निजी प्रशासन में अंतर खारिज किया ।
- उल्लेखनीय है कि फेयॉल ने 14, मुने-रैले ने 4, गुलिक ने 10 तथा उर्विक ने 29 व 8 सिद्धान्त दिए ।
- फेयोल व गुलिक ने तीसरा सिद्धांत आदर्श संगठन सिद्धांत/शास्त्रीय विचारधारा दिया ।
- इस चरण में कुल 36 सिद्धान्त दिए गए ।
- इस चरण के चिंतकों को शास्त्रीय चिंतक कहा जाता है ।

तृतीय चरण (चुनौतियों का काल) (1938-47 ई.) :-

- इस चरण में प्रशासन से सम्बन्धित सिद्धान्तों को लोकप्रियता के बावजूद गम्भीर चुनौतियों व आलोचनाओं का शिकार होना पडा ।
- 1939 ई. आल्टन मेयो ने मानव संबंध सिद्धान्त दिया ।

- 1938 ई. में चेस्टर बर्नार्ड द्वारा "The Function of Executive" पुस्तक में किसी भी प्रशासनिक सिद्धान्त का उल्लेख नहीं किया । अतः लोक प्रशासन के विद्वानों को इससे निराशा हुई ।
- 1946 ई. में हर्बर्ट साइमन ने "Administrative Behaviour" नामक पुस्तक में प्रशासनिक सिद्धान्तों को मुहावरे व लोकोक्तियों में कहा ।
- इसी क्रम में वर्ष 1947 में रॉबर्ट डहल ने "Science of Public Administration: Three Problems" पुस्तक में लोक प्रशासन के विज्ञान बनने में तीन बाधाओं का उल्लेख किया जो क्रमशः प्रशासन का मूल्य युक्त अध्ययन, मानव व्यवहार की परिवर्तनीयता, सामाजिक परिवेश थी ।

चतुर्थ चरण (पहचान का संकट) (1948–1970 ई.) :-

- इस चरण में लोक प्रशासन के कुछ विद्वान राजनीति विज्ञान की ओर चले गए तथा जॉन गॉस ने वर्ष 1950 में ''Trends in the theory of Public Administration'' नामक लेख में लोक प्रशासन को राजनीति विज्ञान की ही एक शाखा बताया लेकिन लोक प्रशासन विषय के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए कुछ नई अवधारणाओं का विकास हुआ । मार्टिन ने इसका समर्थन किया ।

उदा. – तुलनात्मक लोक प्रशासन (1952)
विकास प्रशासन (1955)
New Public Administration (1968)
जन चयन विचारधारा (1970)

पाँचवां चरण (अन्तः अनुशासनात्मक अध्ययन पर बल या नव – लोक प्रशासन काल) (1971–90 ई.) :-

- इस चरण में लोक प्रशासन ने राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, प्रबन्धन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र के साथ गहरे (घनिष्ठ) सम्बन्ध स्थापित किए ।
- इस चरण में पारम्परिक लोक प्रशासन के विभिन्न सिद्धान्तों राजनीति प्रशासन द्विविभाजन, संगठन में पदसोपानी व्यवस्था, प्रशासन का मूल्य–मुक्त अध्ययन आदि को खारिज/नकार दिया ।

प्रशासन की नीति निर्माण में भूमिका :-

खारिज क्यों (राजनीति)	पक्ष में तर्क (प्रशासन)
समय नहीं होना ।	योग्य है ।
कार्य भार ज्यादा होना ।	अनुभवी और प्रशिक्षित है ।
तकनीकी योग्यता नहीं होना ।	तकनीकी योग्यता है ।
अनुभव नहीं है प्रशिक्षण नहीं है ।	आँकडों की उपलब्धता है ।
स्थानीय परिस्थितियों की जानकारी नहीं है ।	स्थानीय परिस्थितियों की जानकारी ।

प्रशासन की नीति निर्माण में भूमिका आवश्यक हो जाती है । जब प्रशासन नीति निर्माण में भूमिका निभाता है तभी नीति निर्माण में वास्तविकता आती है । नीतियों के क्रियान्वयन के प्रति वचनबद्धता आती है । विकास प्रशासन और नवीन लोक प्रशासन की आलोचना शुरू हो गई । इन संकल्पनाओं ने साध्यों पर जोर दिया साधनों पर नही ।

- 1980 के दशक में LPG की नीतियों की शुरूआत हो गई थी ।
  लोक प्रशासन की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लग गया था ।
- 1988 ई. में अमेरिका में "द्वितीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन" का आयोजन किया गया ।
  → नवीन लोक प्रबंधन की संकल्पना आयी ।
  (New Public Management)

<u>छठा चरण (1991 से आज तक)</u> :- वर्तमान प्रवृत्तियाँ/लोकप्रशासन और LPG

1. लोकप्रशासन के अर्थ में परिवर्तन – वर्तमान समय में सरकारी के साथ गैर-सरकारी/स्वयंसेवी समस्याओं को लोक प्रशासन में शामिल कर लिया ।
2. निजी कंपनियों के कार्यों को शामिल किया जो सरकार या जनता के पैसे पर निर्भर है ।
3. वर्तमान समय में सरकारी नहीं सार्वजनिक कार्यों का प्रशासन लोक प्रशासन हो गया ।
4. जब लोक प्रशासन की प्रासंगिता पर (निजीकरण के बाद) प्रश्न चिन्ह लगा तो हमने देखा लोक-प्रशासन की प्रासंगिकता में कोई कमी नहीं आयी ।
5. लोक प्रशासन के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य हुआ ।
   निजीकरण – बाजार की भूमिका
   ↓
   बाजार की कमियाँ
   1. माँग एवं पूर्ति के सिद्धान्त पर चलता है ।
      Demand and Supply = Need and Supply
   2. प्रतिस्पर्धा
6. PPP – लोक निजी भागीदारी
7. वर्ष 1992 में विश्व बैंक ने सुशासन या Good Governance की संकल्पना दी ।
8. नवीन लोक प्रबंधन की संकल्पना आयी इसमें 3E's संकल्पना पर बल दिया गया ।
   3E's
   - Efficiency - कार्यकुशलता/दक्षता
   - Economy - मितव्ययता
   - Effectiveness - प्रभावशीलता
9. नियामकीय प्राधिकरणों का उदय हुआ ।
10. कॉर्पोरेट गवर्नेंस + CSR की संकल्पनाओं का उदय हुआ ।

- वर्ष 2008 में "तृतीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन" का आयोजन हुआ ।
  ↓
  लोक प्रशासन के नये अर्थ को इस सम्मेलन में मान्यता मिली थी ।